डॉ० [illegible] कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

B.A. Part III
Hindi Hons
पत्र - 8, सगुण भक्ति काव्य / [illegible] कॉलेज, [illegible]

प्रश्न - मीराँबाई के काव्य में निहित विशेषताओं का उल्लेख करें।
अथवा
मीराँबाई के प्रेम वर्णन या भक्ति भावना पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- आज से लगभग साढ़े चार सौ वर्ष पहले राजस्थान की रेतीली धरती में प्रेम की एक पयस्विनी फूट पड़ी थी, जिसके स्वच्छ-निर्मल प्रवाह से सारा राजस्थान परिप्लुत हो गया, जिसके मधुर गीतों के स्वर पर समस्त उत्तरी भारत झूम उठा। मेवाड़ के राजवंश की वधू होकर भी मीरा ने पर्दे में जकड़ी अनेक रूढ़ियों की बेड़ी को झटककर तोड़ दिया, लोक मर्यादा की धज्जियाँ उड़ा दीं और जीवन के अंत ज़हर को पीकर अमृत बरसाती रही, अपने गिरिधर के आगे सुध-बुध खोकर नाचती रही।

सम्पूर्ण मध्ययुग के इतिहास में मीरा एक अनोखा व्यक्तित्व लेकर आईं थीं। वैसे तो सारा भक्ति-साहित्य ही व्यवस्थावादी रूढ़ियों के प्रति विद्रोह और मानवता के उत्थान का साहित्य है पर इसका सबसे तीखा और सार्थक रूप हमें क्रान्तिकारी कबीर और दर्द दीवानी मीरा की रचनाओं में देखने को मिलता है। विद्रोह की आक्रामक अभिव्यक्ति कबीर में है, उसकी नारी प्रतिक्रिया मीरा में। मध्ययुग की नारी अनेक सामाजिक बन्धनों में जकड़ी थी। बचपन से लेकर जवानी तक तो उसे दूसरों की इच्छाओं का गुलाम बनकर रहना ही पड़ता था। यदि दुर्भाग्य से पति की मृत्यु पहले हो जाती तो उसे जबरदस्ती जलती चिता में झोंक दिया जाता था। जिन्हें अग्नि की लपटों में नहीं झोंका जाता था, उन्हें आजीवन तिल-तिल कर जलना पड़ता था। राजस्थान में तो नारियों पर

S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T — JUL
2007

ज्यादा ही पाबन्दियाँ थीं। मीरा का विकास इन्हीं वातावरण के बीच हुआ था। मीराँ के प्रति इन बन्धनों और व्यवहार के प्रति तिरस्कार का भाव था। लेकिन तिरस्कार खुलकर प्रकट होता तो लोग उसे कुलटा कहने लगते। इसलिए उनकी अपनी भावनाओं पर भक्ति की चादर डाल दी। फिर भी लोगों ने उसे बिगड़ी कहा। मीरा को भक्ति-मार्ग से विमुख करने के लिए विक्रमाजीत ने बड़े क्रूर और कठोर प्रयत्न किये उससे सामंतवाद की गंध आती है। मीरा की विशेषता यह है कि उनकी आपदाओं का धैर्य पूर्वक सामना किया; पर अपनी भावना नहीं बदली। गिरिधर के रूप में जीवन के जिस उदात्त आदर्शों के प्रति उसने अपने को समर्पित कर दिया था उससे वह जीवन भर भी इधर-उधर नहीं हुई।

भावात्मक सच्चाई और ईमानदारी मीरा के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है। मीरा को जीवन में असीम दुःख झेलना था। जिन्दगी भर जहर और जिन्दगी का जहर उसने स्वयं पिया था। जीवन की यही वास्तविक वेदना उनकी कविताओं में विरह से विद्रोह की पीड़ा के रूप में बन गयी है। इसलिए उनकी उक्तियों में इतनी सच्चाई और वेदना है। मीराँ स्वयं कहती हैं —

सूली ऊपर सेज पिया की किस विधि मिलणा होय।
तो इन अतिशय भावना पर भावभूति की आँखों में भरी हुई पंक्तियों का हृदय पर इतना अधिक प्रभाव पड़ता है, जितना कल्पना की ऊँची-से-ऊँची उड़ान का भी आघात नहीं पड़ता है।

मध्यकालीन सामंतवर्ग की राजकुमारी और वधू होने के बाद भी घर से बाहर निकलकर चमत्कार ईश्वर की प्रिया होना तथा शूद्रजातीय संतों के साथ निःसंकोच मिलना-जुलना सांस्कृतिक परिस्थितियों के